1. Title of the thesis-

“छत्तीसगढ़ के कमार आदिमजाति पर आर्थिक विकास कार्यक्रमों का प्रभाव ”

(गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)

2 प्रस्तावना (.Introduction) :–

भारतीय जनजातियों को विद्वानों द्वारा अलग–अलग नामों से संबधित किया गया है, जैसे आदिवासी, जनजातियाँ, जंगल निवासी, वन्यजाति, अरण्यजाति, गिरिजनँ, पिछड़ा हिन्दू, आदि ।

भारत में स्वतंत्रता से पुर्व 'अनुसूचित जनजाति ' शब्द के सर्वमान्य व सर्वत्र लागु होने वाली कोई परिभाषा नहीं थी। सर्वप्रथम तत्कालीन भारत सरकार ने सन् 1935 के 'भारत सरकार अधिनियम में' तथाकथित जनजातियों के विकास व सुधार में प्रवधान किये व जनजातियों के आरक्षण के नीतियों को अनुसूची में अनुसूचित किया गया। इसी समय से अनुसूचित जनजाति की अवधारणा का अविर्भाव हुआ, जिसे बाद में केन्द्र भारत के सविधान में सम्मिलित कर लिया गया। इसी आधार पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत निर्दिष्ट आदिवासी समुह को अनुसूचित जनजातियॉ कहा जाने लगा।

भारत के सम्पुर्ण भौगौलिक क्षेत्र का 20 प्रतिशत भाग जनजातीय प्रदेश है। तथा जनजाति समुहों की संख्या 500 से अधिक है। भारत में 1951 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 1,91,11,498 थी । जबकि 2001 की जनगणना के अधार पर 8,43,26,240 थी, जो कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत भाग है ।

छत्तीसगढ़ राज्य में लगभग एक तिहाई जनसंख्या जनजातियों की है । जो लगभग सभी जिलों में निवासरत है। राज्य की कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 2,08,33,803 थी, जिसमें अनुसूचित जनजातियों की 66,16,596 है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 31.76 प्रतिशत है । छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत् 5 जनजातियों क्रमशः कमार, अबुझमारिया, पहाडी कोरवा, बिरहोर और बैगा को आदिम जनजाति (विशेष पिछड़ी जनजाति) के रूप में भारत सरकार द्वारा मान्य किया गया है । ये जनजातीयॉ न्यून साक्षारता व तकनीकि पूर्व कृषि करने के कारण आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़ी है । अतः शासन द्वारा इनके सर्वागींण विकास हेतु अलग से विकास एजेन्सी की स्थापना कर विशेष प्रयास किये जा रहे है ।

इन आदिम जनजातियों में कमार जनजाति मुख्यतः रायपुर, गरियाबंद, धमतरी, महासमुन्द एवं अल्प संख्या में कांकेर जिले में निवासरत है । छत्तीसगढ़ राज्य में कमार जनजाति के कुल 5485 परिवार निवासरत् हैं। 2001 की जनगणना के आधार पर कमार जनजाति की संख्या 23113 है ।

यद्यपि देश की आजादी के बाद से ही शासन द्वारा विकासात्मक नीति बनाकर विभिन्न योजनाओं के माध्यम सें अपार धन राशि व्यय किया जा रहा है। किन्तु आपेक्षित सफलता आजपर्यन्त अप्राप्त है । शोध अध्ययन का केन्द्र बिन्दु ही इस तथ्य पर आधारित है अर्थात इन योजनाओ का मूल्यांकन करना व इनके उत्थान हेतू सुक्षाव देना।

3. A brief review of the work already done in the field

भारत में विशेष पिछड़ी जनजातियों ने पूर्व में अनेक शोधकर्ताओं, समाजशास्त्रीयों, मानवशास्त्रीयों एवं अर्थशास्त्रीयों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है । इन्होनें इनकी जीवन शैली को विभिन्न आयामों से देखा है । न केवल भारतीय शोधकर्ताओं वरन् विदेशी शोधकर्ताओं ने भी अपने शोध अध्ययन, शोध रिपोर्ट गजेटियर आदि के माध्यम से अनेक जानकारी प्रदान की है । इनमें से पमुख शोधकर्ता हट्टन, वेरियन एल्विन, मजुमदार, कर्नलवार्ड, रसल एण्ड हिरालाल एवं कर्नल डाल्टन आदि प्रमुख है । इन सभी ने इन विशेष पिछड़ी जनजातियों की पौराणिक विशेषताएं, सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक मान्यताएं एवं अन्धविश्वास के आधार पर उपलब्ध साहित्य के आधार पर विस्तार से प्रकाश डाला है । कुछ अन्य विद्वानों ने भी इस विशेष पिछड़ी जनजाति पर अनेंक आयामों के आधार पर अध्ययन किया है । –

डेविड 1939 – “समाजशास्त्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त में आदिवासियों की समाजीकरण एवं आर्थिक स्थिति का दक्षिण और पूर्वी आफ्रीका के कुछ लोगों को निर्देशित किये हैं।”

दया मजुमदार 1940 – “भोरिया जनजाति के आर्थिक संगठन पर अध्ययन किया गया ।”

साहिलिनस 1940 – “आफ्रीका के जनजातियों के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह बतलाया कि अधिंकाश आफ्रीकी समाज एक ऐसी अर्थव्यवस्था में जीवन-यापन कर रहे जो कि पाश्चात्य अर्थव्यवस्था के सर्वथा भिन्न है ।”

गल्फमेन मेक्स 1945 –“ विशिष्ट अध्ययन छोटा नागपुर की “उरांव जनजाति” पर उसके इतिहास, आर्थिक सामाजिक जीवन तथा कियात्मक संगठन पर किया गया । जिसमें प्रमुखता से गांव सरंचना तथा आर्थिक जीवन पर प्रकाश डाला गया था ।”

डोकिया किरण 1947 – “संयत परगना के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया ।”

चट्टोपाध्याय 1947 –“भेलधार जंगल के कोरकू की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया ।”

टोप्पो 1963 –“छोटा नागपुर के जनजातियों के साथ–साथ सामाजिक स्तर का भी विश्लेषण किया ।”

ट्रमबल 1965 – “**मानव** और शिकारी के खाद्य पदार्थ के संग्रहण के बारे में अध्ययन किया ।”

शाह 1967 – “गुजरात में जनजाति अर्थव्यवस्था में पाया कि गुजरात में जनजाति सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था सभी दृष्टिकोण से स्थिर रहा । तथा व्यवसाय में बहुत कम अन्तर पाया गया कृषि उनका मुख्य व्यवसाय है ।”

दूबे 1967 – “कमार जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के बारे में अध्ययन किया ।”

बोलिशा सारकिल 1969 – “पारस्परिक अदान–प्रदान एवं आधुनिक बाजार में अध्ययन किया कि विभिन्न प्रकार की अर्थव्यवस्था प्राचीन से आधुनिकता की ओर किस प्रकार आई ।”

सिन्हा 1969 – “बनारी के जनजाति बाजार में सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया के अनुसार बाजारी सेवा के लिए जनजाति लोगों के साथ संबध बनाये हुए है । जैसे कृषक वर्ग ओर सरकार के ऐजेण्ट औद्यौगिक दुनिया में यह सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया हेतु एक आदर्श प्रयोगशाला बनाने का सुझाव दिया है ।”

जैन 1976 – “नैनीताल की भोक्सा जनजाति का समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है जिसमें अर्थव्यवस्था का चि़त्रण प्रमुख रूप से किया गया है ।”

सिंग 1976 – “संथाल जनजाति के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया ।”

पटेल 1974 –“ भारत के आदिवासियों में बदलतें हुए भूमि की समस्या में यह पाया कि कृषक श्रमिकों की संख्या में जनजातियों की संख्या में कमी होती जाती रही है । यह उसकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, जनजाति कृषि को प्रभावित कर रहा है औार बंधुवा मजदूर के रूप में जीवन यापन करते है ।”

महांलिंगम 1971 –“मिजोरम के भूमिहीन जनजातियों की आर्थिक जनजीवन पर अध्ययन किया गया ।”

अन्सारी 1986 – “मणिपुर के क्षेत्र की जनजातियों की आर्थिक जनजीवन पर अध्ययन किया गया ।”

डान्डा 1977 – “छत्तीसगढ़ के जनजाति अर्थव्यवस्था का क्षेत्रिय अध्ययन ।”

हसन 1979 – “तराई की बुक्शा की सामाजिक आर्थिक भिन्नता का अध्ययन किया है ।”

सचिदानंद और मंडल 1989– “बिहार की जनजातियों में औद्यौगीकरण और सामाजिक असंगठन पर अध्ययन किया गया ।”

सन्धवार 1990 – “कोरबा जनजाति की समाज और अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया ।”

रजक और सरकार 1991 –“छोटा नागपुर की जनजातियों के कृषि उत्पादनशीलता का अध्ययन किया गया ।”

रेड्डी 1991 – “आन्ध्रप्रदेश की सुगली जनजाति का ऐतिहासिक और मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया ।”

उपरोप्त साहित्य व अध्ययन विशेष पिछड़ी जनजातियों के विभिन्न पक्षों के बारे में जानकारी अवश्य देंतें है, परन्तु कमारों के आर्थिक विकास पर पड़ने वाले शासकीय प्रयासों पर प्रकाश नहीं डालते । अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ के कमार जनजाति के आर्थिक विकास कार्य पर शासकीय योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा ।

4. अध्ययन के उद्‌देश्य (**Objectives**)–

अध्ययन उद्‌देश्य के अन्तर्गत निम्नाकिंत बिन्दुओं को शामिल किया जा सयेगा ।

1. कमार जनजाति की अर्थव्यवस्था तथा उनकी आर्थिक गतिविधीयों का अध्ययन करना ।
2. कमार जनजाति के लिये संचालित आर्थिक विकास कार्यक्रमों का अध्ययन करना ।
3. कमार जनजाति की आर्थिक स्थीति पर आर्थिक विकास कार्यक्रमों के प्रभाव को ज्ञात करना ।
4. आर्थिक विकास कार्यक्रमों का कमार जनजाति की शैक्षणीक व सामाजिक स्थीति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना ।
5. कमार जनजाति के विकास में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना तथा इनके निराकरण के लिये सुझाव देना ।

<u>परिकल्पना–</u>

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित परिकल्पना पर अधारित है ।

1. कमार जनजाति की अर्थव्यवस्था अत्यन्त पिछड़ी हुई होने के कारण अधिकांश लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रहें है ।
2. कमार जनजाति वर्तमान में परम्परागत व्यवसाय एवं प्राथमिक व्यवसाय में संल्गन है ।
3. आर्थिक विकास के कार्यक्रम एवं कमार जनजाति की शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मध्य सार्थक संबन्ध है ।
4. आर्थिक विकास के कार्यक्रम एवं कमार जनजाति की आर्थिक स्थीति के मध्य सार्थक संबन्ध है ।

6. शोध प्रविधि **(Prposed methodology) -**

शोध अध्ययन में निम्नाकिंत शोध प्रविधि तकनीक का प्रयोग किया जायेगा –

<u>अ. प्रस्तावित शोध क्षेत्र –</u>

अध्ययन ईकाई का शोध क्षेत्र गरियाबंद जिले के दो विकासखण्ड क्रमशः छुरा और गरियाबंद के 40 ग्रामों के 400 कमार परिवारों का चयन कर अध्ययन संबधी विश्लेषण एवं निष्कर्ष ज्ञात किये जायेंगे । प्रत्येंक गांव से औसतन 10 परिवारों का अध्ययन में शामिल किया जायेगा ।

ब. समंक संकलन–

I-प्राथमिक संमक (**Primary Data**)

शोध अध्ययन के अन्तर्गत तैयार किया गया प्रश्नावली दो भागों में विभम्त होगा । प्रथम भाग के अन्तर्गत चयनित कमार ग्रामों एवं परीवारों से प्रत्यक्ष संपर्क कर आपेक्षित आंकड़ों का संकलन किया जावेगा। जबकि प्रश्नावली के दूसरें भाग में कमार जनजाति के संपर्क में रहने वाले जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों, कर्मचारियों गैर सरकारी संगठनों, व्यापारियों एवं सम्मानित नागरीकों सें इनकी विकास से सम्बधित जानकारी व सुक्षाव सम्बधित आंकडे एकत्रित किया जायेगें।

II.द्वितीयक संमक(Secondary Data)–

शोध अध्ययन के अन्तर्गत निष्कर्षो के समर्थन में द्वितीयक आंकडों को उचित स्थान दिया जायेगा। जिसके अन्तर्गत विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों, शासकीय दस्तावेज, भारत व छत्तीसगढ़ की विभिन्न आदिवासी विकास कार्यलयों से प्राप्त साहित्य व सर्वेक्षण रिपोर्ट, शोध ग्रन्थ एवं गैर सरकारी संगठनों से प्राप्त निष्कर्षो व आंकडों को आवश्यकतानुसार शामिल किया जायेंगा।

स. प्रयुक्त उपकरण(Tools to be used)–

1. दो तरह के प्रश्नावली का प्रयोग कर चयनित कमार परिवारों व ग्राम का प्रत्यक्ष संपर्क कर रैण्डम सैम्पलिग विधि सें आपेक्षित आंकडे एकत्र किया जायेगा।

2. अध्ययन के शोध समर्थमन में ग्र्रफ नक्सा दंडचित्र आदि के निर्माण हेतू कम्प्युटर का उपयोग किया जायेगा।

3. फोटोग्राफी हेतू कैमरे का उपयोग किया जायेगा।

4. सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत अनुपात, प्रतिशत, व औसत आदि का उपयोग किया जायेगा।

5. सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्ट, साहित्य व आलेख के निष्कर्ष शामिल किये जायेगें।

द. शोध अवधि–(Schedule Time)–

शोध अध्ययन के निष्कर्ष 11 वीं पंचवर्षीय योजना के (2007–12) के दौरन एकत्र किये गये आंकडे व विश्लेषण पर आधारित होंगा।,

7. संभावित निष्कर्ष (Expected Outcome of the proposed work)–

भारत आफ्रीका के बाद दूसरा सबसे बड़ा महाद्विप है जहॉ सर्वाधिक आदिवासी निवास करते है। यहॉ 500 से अधिक समुदायों का शासन द्वारा जनजाति समुदाय के रूप में चिन्हित किया गया है। इनमें से 75 जनजाति समुदायें को विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है, जिनके उन्नयन से सम्बद्व विभिन्न समस्याएं दीर्घकाल में अभी तक प्रासंगिक बनी हुई है। य़द्यपि देश के आजादी के बाद से इन विशेष पिछडी जनजातीय विकास पर प्रति वर्ष अपार धन राशि व्यय किये जा रहे हैं। लेकिन विकास की आपेक्षित गति दुर की कौडी ही नजर आती है। अतः समय–समय पर इनकी समीक्षा करना आवश्यक है, जिससे असफल एवं अव्यवहारीक योजनाओं की पहचान हो सके। साथ ही विकास हेतु बेहतर सुझाव भी अध्ययन में शामील है। इससे इन जनजातियों का बेहतर विकास हो सकेगा व उन्हे देश की मुख्य धारा में शामील किया जा सकेगा। इस अध्ययन से प्रदेश के अन्य विशेष पिछडी जनजातियों के विकास से संबधित नीति बनाने में भी सहायता मिलेगी

शोध प्रबंध के अध्याय –

सुनियोजित एवं क्रमबद्ध अध्ययन के लिए प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित सात अध्यायों में विभक्त किया गया है

विषय सूची

अध्याय 1 – अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना
1.2 पूर्व शोध विवरण
1.3 अध्ययन का उददेश्य
1.4 अध्ययन का महत्व
1.5 अध्ययन क्षेत्र
1.6 शोध प्रविधि
a)संमक संकलन
1 प्राथमिक संमक
2 द्वितियक संमक
b) शोध क्षेत्र
c) प्रयुक्त उपकरण
1.7 परिकल्पना
1.8 सीमाएं

अध्याय 2 – जनजाति परिचय

2.1 भारत की जनजातियाँ (विशेष पिछड़ी जनजाति परिचय)
2.2 आदिवासी विकास की अवधारणा
2.3 जनजातियों का आर्थिक आधार पर वर्गीकरण
2.4 छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजाति

अध्याय 3 – कमार आदिम जनजाति

3.1 उत्तपत्ति एवं ऐतिहासिक परिचय
3.2 गरियाबंद जिले के कमार आदिमजाति
3.3 जनांकिकीय विशेषताएं
-जनसंख्या वितरण

-घनत्व व लिंगानूपात

-साक्षरता

3.4 सामाजिक विशेषताएं

जन्म व मृत्यू, विवाह, गोत्र, टोटम आदि

3.5 सांस्कृतिक विशेषताएं

-वर्ष भर चलने वाले तीज त्यौहार

-धार्मिक उत्सव

-भाषा, बोली आदि

-गोदना

-मद्यपान/नशे की प्रवृत्ति

3.6 राजनैतिक एवं सामाजिक संगठन

अध्याय 4 – कमार आदिमजाति की आर्थिक विशेषताएं

4.1 पौराणिक अर्थव्यवस्था

4.2 वर्तमान अर्थव्यवस्था

-कृषि

-वनोपज संग्रहण

-मजदूरी

-पशुपालन

-अन्य

अध्याय 5 – कमार आदिमजाति से संबधित विकास योजनाएं

5.1 ऐतिहासिक परिचय

5.2 वर्तमान आर्थिक विकास की योंजनाएं

a)विकासात्मक शासकीय नीतियाँ

b)योजनाओं का क्रियान्वयन

c)वित्तिय व्यवस्था

d)विकासात्मक योजना की समीक्षा

(11वीं पंचवर्षीय योजना के संदर्भ में)

e)सफल एवं असफल योजनाएं

अध्याय 6 – कमार आदिमजाति के आर्थिक विकास के प्रमाण

6.1 आय संरचना
6.2 व्यय संरचना
6.3 ऋणग्रस्तता
6.4 उत्पादन प्रवृत्ति
6.6 उपभोग प्रवृत्ति
6.6 आर्थिक आंकाक्षा

अध्याय 7 – कमार आदिमजाति की समस्याएं एवं सुझाव

7.1 भगौलिक/प्राकृतिक
7.2 सामाजिक व सांस्कृतिक
7.3 राजनैतिक
7.4 आर्थिक

निष्कर्ष व उपसंहार

नोट :– शोध कार्य योजना में आवश्यकतानूसार परिवर्तन किया जा सकता है

संदर्भ ग्रन्थ

1. अली ए.एस.	1973	ट्राइबल डेमोग्राफी इन मध्यप्रदेश (अ सोशियो–इकोनामी स्टडी) भोपाल.
2. बसु अशोक आर.	1985	ट्राइबल कल्चर इकोनामी आफ हेल्थ राउत पब्लिकेशन जयपुर
3. बोस निर्मल कुमार	2004	ट्राइबल लाइफ इन इडिंया नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली .
4. चट्टोपाध्याय,के.पी.	1947	इकोनामी फाउडेंशन आफ द कोरकस आफ राय ऐशियाटिक सोसायठी आफ बंगाल 2(1)
5. भट्ट एस.सी.एण्ड भार्गव	2009	लैण्ड पिपुल आफ इंडिया स्टेट, वैल.6, कल्पज पब्लिकेशन, नई दिल्ली
6. दुबे, बी.के.	1967	अ स्टडी आफ ट्राइबल पीपुल एण्ड एरिया, मध्यप्रदेश भोपाल.
7. डान्डा, ए.के.	1977	ट्राइबल इकोनामी इन छ.ग.इन एरिया स्टडी, एडिटेड बाय ए.के.डान्डा, कलकत्ता पृ.स.98–116
8. दास टी.एस.	1987	लाइफ स्टाइल इंडिया ट्राइबल वेल.1, जैल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली .
9. डाल्टन,इ.डी.	1872	डिस्क्रीपटीव एन्थोलाजी आफ बेन्गा, सुप्रीयेन टेन्डर आफ गर्वमेन्ट प्रींटीग प्रेस कलकत्ता
10. गुप्ता, एच.एस.	1981	पैटर्न एनालिशिस आफ ट्राइबल डिस्ट्रीब्युसन इन मध्यप्रदेश पेपर प्रेसेन्डेड इफ सेकण्ड एनुअल कानफ्रेन्स, एन ए जी आई
11. गिस्बर्ट, पी.	1978	ट्राइबल इंडिया, ए सिन्थेटिक वीव आफ प्रीमीटीव मैन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
12. गुप्ता रंजित	1977	प्लानिंग आफ ट्राइबल डेवेलमेंट नई दिल्ली
13. लोकनाथन, पी.एस.	1963	सोशियल–इकोनामी कनडिशन आफ ट्राइबल इन मध्यप्रदेश नई दिल्ली
14. मेसिकाई, जे.बी.	1977	मध्यप्रदेश प्रोटेक्शन फार ट्राइबल लिंक
15. नाईक,टी.बी.	1964	ट्राइबल आफ मध्यप्रदेश डिपाट आफ ट्राइबल वेलफेयर
16. नायडु पी.आर		भारत के आदिवासी विकास की समस्याँ राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 110002
17. रोअनी, एच.बी.	1977	द वाइल्ड ट्राइबल आफ इंडिया दिल्ली
18. रायजादा, ए.	1984	ट्राइबल डेवेलपमेन्ट इन मध्यप्रदेश (ट्राइबल स्टडीस आफ इंडिया, सिरिस 112)

एप्पयड़ रिसर्च, पब्लिकेशन एनसीएईआर नई दिल्ली

21. सिन्हा,आर.आर.	1956	आदिवासी अर्थव्यवस्था के सांस्कृतिक आधार प्रकाशन मध्यप्रदेश हिन्दी एकादमी भोपाल ।
22. सिंह डॉ रामराज	1976	"आदिवासी अर्थव्यवस्था के सांस्कृतिक आधार" बिहार हिन्दी ग्रन्थ एकादमी सम्मेलन भवन पटना ।
23. शिवतोश डाय	1969	भारत की जनजातियाँ प्रकाशन बिहार ग्रन्थ एकादमी पटना ।
24. शर्मा,बी.डी.	1980	ट्राइबल डेवलपमेन्ट पब्लिकेशन मध्यप्रदेश ग्रन्थ एकादमी भोपाल
25. गिरीयोसन डब्लू. वी.	2008	मध्यप्रांत और बरार में आदिवासी समस्याएं जनवरी 2008 575 पेज
26. रिसले हबर्ट		**the tribe and cast of bangal ethnographic glossary** बंगाल स्क्रिटीयल प्रेस पी.पी.388–391
27. वर्मा,वी.के.	1984	अ जीओग्राफीकल सटडी आफ ट्राइबल पापुलेशन आफ छत्तीसगढ़
28. विद्यार्थी,एल.पी.	2008	छ.ग. की आदिम जनजातियाँ भाग–4
29. शुक्ल अमिताभ	1981	गांवों की बदलती आर्थिक सामाजिम स्थिति योजना, 25(5) पृ.स.34–35
30. कृषि विश्वविद्यालय	1977	बस्तर जिले में कोटा दंतेवाड़ा में आदिवासी विकास कार्यो का मूल्यांक,जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय जबलपुर पृष्ठ सं208

शोध निर्देशक	सह निर्देशक	शोधार्थी 12.3.14
डॉ.महेश श्रीवास्तव	~~डॉ आर.ब्रम्हे~~ डॉ. रवीन्द्र ब्रह्मे	कु.ललिता प्रजापति

शोध केन्द्र

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)